e-ISSN No. 3107/6564

भाग 02 अंक 01 / जनवरी 2026

e-ISSN No. 3107/6564

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)

Contact to us - E-mail: editorinchief@naso.org.in / website: www.naso.org.in

e-ISSN No. 3107/6564

डॉ. भाष्कर दुबे
मुख्य संपादक
ediotorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग, SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग, शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –

डॉ. भाष्कर दुबे

पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका

पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) 230124

कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007

Website – www.naso.org.in

E-mail – editorinchief@naso.org.in

Contact – 9936902749 / 7068708058

e-ISSN No. 3107/6564

स्वदेशी गायों का महत्व

एवं

दीनदयाल शोध संस्थान

लाल बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र गोंडा की भूमिका

डॉ. अभिषेक कुमार मिश्रा (विषय वस्तु विशेषज्ञ - पशुपालन) दीनदयाल शोध संस्थान,लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोंडा
डॉ. सुधांशु (विषय वस्तु विशेषज्ञ - प्रसार) दीनदयाल शोध संस्थान,लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोंडा
डॉ. आशीष कुमार पांडेय (विषय वस्तु विशेषज्ञ - पादप संरक्षण) दीनदयाल शोध संस्थान,लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोंडा
डॉ. अंकित तिवारी (विषय वस्तु विशेषज्ञ - एग्रोनॉमी) दीनदयाल शोध संस्थान,लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोंडा
वैष्णवी तिवारी (पी.एच.डी. शोधार्थी - गृह विज्ञान) माँ पाटेश्वरी विश्वविद्यालय, बलरामपुर

भारत एक प्राचीन कृषि प्रधान राष्ट्र है, जहाँ पशुपालन और खेती की परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है। भारतीय ग्रामीण जीवन की कल्पना खेती के बिना अधूरी है, और खेती की कल्पना पशुधन के बिना संभव नहीं है। इनमें भी गाय का स्थान सर्वोच्च माना गया है। भारत में गाय केवल दूध देने वाला पशु नहीं है, बल्कि इसे संस्कृति, धर्म, स्वास्थ्य, पर्यावरण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार माना गया है। यही कारण है कि गाय को "गोमाता" कहकर सम्मान दिया जाता है। भारत की पारंपरिक कृषि व्यवस्था में गाय का योगदान बहुआयामी रहा है। वह किसान के घर की समृद्धि का प्रतीक रही है, परिवार के पोषण का साधन रही है तथा खेतों की उर्वरता बढ़ाने वाली प्राकृतिक शक्ति भी रही है। देशी गायों की विशेषता यह है कि वे भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित हुई हैं और हजारों वर्षों से ग्रामीण जीवन को सहारा देती रही हैं। आज के आधुनिक युग में जब रासायनिक खेती, विदेशी नस्लें और मशीनों का प्रभाव बढ़ा है, तब भी देशी गाय का महत्व कम नहीं हुआ है, बल्कि इसके संरक्षण और वैज्ञानिक उपयोग की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है।देशी गाय का वैज्ञानिक नाम Bos indicus है। इसकी मुख्य पहचान इसकी पीठ पर उपस्थित कूबड़ है, जो इसे विदेशी गायों से अलग बनाता है। भारतीय देशी नस्लें प्राकृतिक रूप से अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता वाली होती हैं और इन्हें कम खर्च में पाला जा सकता है। इसके अतिरिक्त देशी गाय का दूध, गोबर और गोमूत्र अनेक औषधीय और जैविक गुणों से भरपूर होते हैं।भारतीय समाज में गाय का महत्व केवल कृषि तक सीमित नहीं रहा है। गाय भारतीय धर्म और संस्कृति का अभिन्न अंग है। वेदों, पुराणों, उपनिषदों तथा आयुर्वेदिक ग्रंथों में गाय को अत्यंत पवित्र और पूजनीय बताया गया है। गाय को "कामधेनु" कहा गया है, अर्थात ऐसी दिव्य शक्ति जो मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही गायों के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है।गाय के दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र को मिलाकर "पंचगव्य" कहा गया है। पंचगव्य का आयुर्वेद में विशेष महत्व है। यह न केवल स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, बल्कि प्राकृतिक कृषि प्रणाली में भी इसे अमृत समान बताया गया है। देशी गाय का घी यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठानों तथा औषधियों में प्रयोग किया जाता

e-ISSN No. 3107/6564

रहा है। ग्रामीण जीवन में गाय का होना समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।स्वतंत्रता के बाद भारत में दूध उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से विदेशी नस्लों को देश में लाया गया। विशेष रूप से 1970 के बाद "श्वेत क्रांति" के अंतर्गत जर्सी और होल्सटीन फ्रिज़ियन जैसी विदेशी नस्लों को आयात किया गया। इससे दूध उत्पादन तो बढ़ा, लेकिन इसके साथ-साथ देशी नस्लों का संरक्षण कमजोर होता गया। कई स्थानों पर देशी नस्लों की संख्या घटने लगी और विदेशी नस्लों का प्रभाव बढ़ गया।विदेशी नस्लों के दूध उत्पादन की क्षमता अधिक होती है, लेकिन इनके रखरखाव में अधिक खर्च होता है। वे भारतीय जलवायु में जल्दी बीमार हो जाती हैं और इनके लिए विशेष आहार एवं देखभाल की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत देशी गायें कम संसाधनों में भी टिकाऊ होती हैं और कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रह सकती हैं। इसलिए दीर्घकालीन दृष्टि से देशी गायें किसानों के लिए अधिक लाभकारी सिद्ध होती हैं।आज देशी गाय के महत्व को केवल धार्मिक या सांस्कृतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और आर्थिक दृष्टि से भी स्वीकार किया जा रहा है। देशी गाय का दूध "A2 दूध" के रूप में प्रसिद्ध हो रहा है। वैज्ञानिक शोधों के अनुसार देशी गायों के दूध में A2 बीटा-केसीन प्रोटीन पाया जाता है, जो अधिक सुपाच्य और स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। इसके विपरीत विदेशी नस्लों के दूध में A1 प्रोटीन अधिक पाया जाता है, जिसे कुछ शोधों में मधुमेह, हृदय रोग और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़ा बताया गया है। इसी कारण A2 दूध की मांग तेजी से बढ़ रही है और देशी गायों का पालन आर्थिक रूप से लाभदायक बनता जा रहा है।देशी गाय का एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान इसके गोबर और गोमूत्र से जुड़ा है। गोबर भारतीय कृषि व्यवस्था का प्राकृतिक उर्वरक है। यह मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है, जैविक कार्बन प्रदान करता है और भूमि की जल धारण क्षमता को सुधारता है। गोबर से जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट और बायोगैस जैसी अनेक उपयोगी चीजें बनाई जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त गोबर से बनने वाला "गोबर गैस संयंत्र" ग्रामीण ऊर्जा का बड़ा स्रोत बन सकता है, जिससे लकड़ी और अन्य ईंधनों पर निर्भरता कम होती है।गोमूत्र भी औषधीय गुणों से भरपूर माना जाता है। आयुर्वेद में गोमूत्र को अनेक रोगों के उपचार में उपयोगी बताया गया है। गोमूत्र अर्क का प्रयोग आज अनेक जैविक उत्पादों में किया जा रहा है। इसके साथ ही गोमूत्र से प्राकृतिक कीटनाशक भी तैयार किए जाते हैं, जो खेती में रासायनिक कीटनाशकों का विकल्प बन सकते हैं।देशी गाय आधारित प्राकृतिक खेती आज किसानों के लिए एक टिकाऊ मॉडल बनकर उभर रही है। प्राकृतिक खेती में गाय के गोबर और गोमूत्र से जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत और दशपर्णी अर्क जैसे जैविक घोल बनाए जाते हैं। ये मिट्टी में सूक्ष्मजीवों को सक्रिय करते हैं और फसल उत्पादन में वृद्धि करते हैं। इससे खेती की लागत घटती है और किसान को रसायनों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।इसी दिशा में दीनदयाल शोध संस्थान लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालग्राम, गोंडा किसानों को देशी गाय पालन, प्राकृतिक खेती तथा जैविक कृषि में वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। यह केंद्र किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम, प्रशिक्षण शिविर, पशु स्वास्थ्य शिविर और प्राकृतिक खेती प्रदर्शन इकाइयाँ संचालित करता है।कृषि विज्ञान केंद्र गोंडा द्वारा समय-समय पर देशी गौपालन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें किसानों को संतुलित आहार, नस्ल सुधार, पशु स्वास्थ्य, टीकाकरण तथा दुग्ध उत्पादन बढ़ाने की वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी दी जाती है। साथ ही जैविक खाद निर्माण, पंचगव्य एवं जीवामृत निर्माण कार्यशालाएँ किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रही हैं।आज आवश्यकता है कि देशी गायों के संरक्षण और संवर्धन को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया जाए। देशी गाय न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकती है, बल्कि प्राकृतिक खेती और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

देशी गायों की प्रमुख नस्लें एवं उनकी उपयोगिता

भारत देशी गाय नस्लों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध देश है। यहाँ की गायें हजारों वर्षों से प्राकृतिक चयन और पारंपरिक पशुपालन प्रणाली के माध्यम से विकसित हुई हैं। देशी गायों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे भारतीय जलवायु में आसानी से अनुकूलित होती हैं, रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है और

e-ISSN No. 3107/6564

कम संसाधनों में भी पाली जा सकती हैं।भारत की प्रमुख देशी नस्लों में साहीवाल, गिर, थारपारकर, रेड सिंधी, हरियाणा नस्ल आदि का विशेष स्थान है। साहीवाल नस्ल पंजाब और हरियाणा क्षेत्र में प्रसिद्ध है और इसे देश की सर्वोत्तम दुग्ध उत्पादन करने वाली नस्लों में गिना जाता है। वहीं गिर नस्ल गुजरात की पहचान है, जो A2 दूध उत्पादन के कारण पूरे देश में लोकप्रिय हो रही है। थारपारकर नस्ल राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में भी जीवित रहने की क्षमता रखती है और कम चारे में भी अच्छा दूध देती है। रेड सिंधी नस्ल की विशेषता उसका सुंदर लाल रंग और मजबूत स्वास्थ्य है। हरियाणा नस्ल उत्तर भारत के किसानों के लिए विशेष उपयोगी है क्योंकि यह दूध के साथ-साथ कृषि कार्य हेतु बैल के रूप में भी लाभ देती है।इन नस्लों का संरक्षण न केवल भारत की जैव विविधता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है, बल्कि ग्रामीण किसानों की आय और टिकाऊ पशुपालन व्यवस्था के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

गोबर एवं गोमूत्र आधारित उत्पाद और ग्रामीण अर्थव्यवस्था

देशी गाय का योगदान केवल दूध तक सीमित नहीं है। गाय का गोबर और गोमूत्र भारतीय ग्रामीण जीवन के सबसे मूल्यवान संसाधनों में से एक है।गोबर प्राकृतिक उर्वरक के रूप में मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है। यह मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा को बढ़ाकर खेतों को लंबे समय तक उपजाऊ बनाए रखता है। गोबर से जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट और गोबर गैस संयंत्र जैसे अनेक उपयोगी साधन विकसित किए जा सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर गैस संयंत्र ऊर्जा उत्पादन का अच्छा विकल्प बन सकता है, जिससे लकड़ी और अन्य ईंधनों पर निर्भरता कम होती है।इसके अतिरिक्त, गोबर से धूपबत्ती, अगरबत्ती, हवन सामग्री, गोबर पेंट और जैविक निर्माण सामग्री जैसे उत्पाद भी बनाए जा रहे हैं, जो ग्रामीण रोजगार के नए अवसर खोलते हैं।गोमूत्र को आयुर्वेद में औषधीय गुणों से भरपूर माना गया है। गोमूत्र अर्क का प्रयोग जैविक कृषि में प्राकृतिक कीटनाशक के रूप में किया जाता है। इसके माध्यम से किसान रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता कम कर सकते हैं। पंचगव्य आधारित औषधियाँ और अन्य जैविक उत्पाद आज बाजार में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं।इस प्रकार, गाय आधारित उत्पाद ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार, छोटे उद्योग और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने का बड़ा माध्यम बन सकते हैं।

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का योगदान

आज रासायनिक खेती के दुष्परिणाम सामने आ चुके हैं। मिट्टी की उर्वरता में कमी, जल प्रदूषण, बढ़ती लागत और स्वास्थ्य समस्याएँ रासायनिक खेती की बड़ी चुनौतियाँ हैं। ऐसे समय में प्राकृतिक खेती का विकल्प तेजी से उभर रहा है, और इसमें देशी गाय की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।प्राकृतिक खेती में गाय के गोबर और गोमूत्र से जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत और दशपर्णी अर्क जैसे जैविक घोल तैयार किए जाते हैं। ये घोल मिट्टी में सूक्ष्मजीवों को सक्रिय करते हैं, जिससे मिट्टी की संरचना सुधरती है और पौधों की वृद्धि बेहतर होती है।जीवामृत से किसान की उत्पादन लागत घटती है और खेती टिकाऊ बनती है। यही कारण है कि देशी गाय आधारित प्राकृतिक खेती आज किसानों के बीच लोकप्रिय हो रही है।

A1 एवं A2 दूध का अंतर

आज देशी गायों के दूध की गुणवत्ता को लेकर विशेष चर्चा हो रही है। दूध में पाए जाने वाले बीटा-केसीन प्रोटीन के आधार पर उसे मुख्यतः A1 और A2 दूध के रूप में वर्गीकृत किया गया है।विदेशी नस्लों की गायों, जैसे जर्सी और होल्सटीन फ्रिज़ियन, के दूध में सामान्यतः A1 प्रकार का प्रोटीन पाया जाता है। कुछ शोधों में यह संकेत दिया गया है कि A1 दूध का पाचन कुछ लोगों के लिए कठिन हो सकता है।इसके विपरीत भारत की अधिकांश देशी नस्लों के दूध में A2 प्रकार का प्रोटीन पाया जाता है, जिसे अधिक सुपाच्य और स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। A2 दूध की बढ़ती मांग ने देशी गाय पालन को आर्थिक रूप से और अधिक लाभकारी बना दिया है।

सरकारी योजनाएँ:

देशी नस्ल संरक्षण हेतु प्रयास

भारत सरकार ने देशी नस्लों के संरक्षण और संवर्धन के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएँ शुरू की हैं।राष्ट्रीय गोकुल मिशन देशी नस्लों के विकास, संरक्षण और नस्ल सुधार हेतु एक प्रमुख योजना है। इसके अंतर्गत गोकुल ग्रामों की स्थापना, गौशालाओं का विकास और कृत्रिम गर्भाधान

e-ISSN No. 3107/6564

कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं।इसी प्रकार राष्ट्रीय कामधेनु योजना गौ आधारित उद्योगों, पंचगव्य उत्पादों और ग्रामीण स्वरोजगार को बढ़ावा देती है। इन योजनाओं का उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना और देशी नस्लों की संख्या को सुरक्षित रखना है।

दीनदयाल शोध संस्थान लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोंडा की भूमिका

देशी गाय संरक्षण, वैज्ञानिक पशुपालन तथा प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में दीनदयाल शोध संस्थान लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालग्राम, गोंडा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और सराहनीय है। यह केंद्र ग्रामीण किसानों के लिए एक मार्गदर्शक संस्था के रूप में कार्य कर रहा है, जो देशी गौवंश के संरक्षण एवं संवर्धन को बढ़ावा देने के साथ-साथ किसानों की आय वृद्धि और टिकाऊ कृषि व्यवस्था की स्थापना में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।यह कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को देशी गाय पालन की आधुनिक एवं वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी प्रदान करता है। केंद्र द्वारा पशुओं के संतुलित आहार प्रबंधन, नस्ल सुधार, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, पशु स्वास्थ्य देखभाल, टीकाकरण, रोग नियंत्रण तथा उचित पशु प्रबंधन जैसे विषयों पर नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इससे किसानों को न केवल पशुपालन की वैज्ञानिक समझ विकसित होती है, बल्कि वे अपने पशुधन को अधिक स्वस्थ और उत्पादक बना पाते हैं।इसके अतिरिक्त, केंद्र प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। किसानों को गोबर एवं गोमूत्र आधारित जैविक खाद निर्माण, वर्मी कम्पोस्ट, जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत तथा पंचगव्य जैसे प्राकृतिक कृषि इनपुट तैयार करने की विधियों का प्रदर्शन एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे किसान रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता कम करके कम लागत वाली, पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ खेती की ओर अग्रसर हो रहे हैं।लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोंडा द्वारा समय-समय पर गौपालन प्रशिक्षण शिविर, प्राकृतिक खेती मॉडल प्रदर्शन, पंचगव्य निर्माण कार्यशालाएँ, पशु स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम तथा कृषि-पशुपालन से संबंधित विस्तार गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों में देशी गाय के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ती है तथा वे देशी नस्लों के संरक्षण एवं वैज्ञानिक पालन को अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं।इस प्रकार यह केंद्र न केवल देशी गाय आधारित पशुपालन व्यवस्था को मजबूत कर रहा है, बल्कि प्राकृतिक खेती, जैविक कृषि, ग्रामीण रोजगार और आत्मनिर्भर भारत अभियान को भी सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

निष्कर्ष

देशी गाय भारतीय कृषि व्यवस्था, ग्रामीण जीवन, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक परंपराओं की एक मजबूत आधारशिला है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में गाय केवल एक दुग्ध उत्पादक पशु नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण समाज की जीवनरेखा रही है। सदियों से देशी गायें किसान परिवारों की आर्थिक समृद्धि, पोषण सुरक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। यही कारण है कि देशी नस्लों का संरक्षण केवल धार्मिक या परंपरागत दृष्टि से ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक, पर्यावरणीय और आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत आवश्यक बन गया है।आज आधुनिक समय में जब रासायनिक खेती, जलवायु परिवर्तन, बढ़ती उत्पादन लागत और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ कृषि क्षेत्र की बड़ी चुनौतियाँ बन चुकी हैं, तब देशी गाय आधारित पशुपालन और प्राकृतिक खेती का मॉडल एक स्थायी समाधान प्रस्तुत करता है। देशी गाय का दूध, विशेष रूप से A2 दूध, पोषण और स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इसकी सुपाच्यता और औषधीय गुणों के कारण आज इसकी मांग तेजी से बढ़ रही है, जिससे किसानों के लिए यह आय का एक नया साधन भी बन रहा है।इसके साथ ही, देशी गाय के गोबर और गोमूत्र का महत्व केवल खेती तक सीमित नहीं है। गोबर से जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट, बायोगैस, गोबर पेंट जैसे उत्पाद तैयार कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाई जा सकती है और ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा एवं रोजगार के नए अवसर विकसित किए जा सकते हैं। गोमूत्र आधारित प्राकृतिक कीटनाशक एवं पंचगव्य उत्पाद खेती को रसायन मुक्त बनाकर पर्यावरण संरक्षण में योगदान देते

e-ISSN No. 3107/6564

हैं। इस प्रकार गाय आधारित उत्पाद प्राकृतिक खेती और ग्रामीण उद्योगों को एक नई दिशा प्रदान करते हैं तथा टिकाऊ विकास की अवधारणा को साकार करते हैं।देशी गाय संरक्षण, प्राकृतिक खेती और किसानों की आत्मनिर्भरता को सशक्त बनाने में दीनदयाल शोध संस्थान लाला बहादुर शास्त्री कृषि विज्ञान केंद्र, गोपालग्राम, गोंडा की भूमिका अत्यंत प्रशंसनीय है। यह केंद्र किसानों को वैज्ञानिक पशुपालन, देशी नस्ल संरक्षण, पशु स्वास्थ्य प्रबंधन, संतुलित आहार, टीकाकरण, जैविक खाद निर्माण तथा पंचगव्य आधारित उत्पादों के निर्माण संबंधी प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविर, जागरूकता कार्यक्रम और मॉडल प्रदर्शन किसानों को आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़कर देशी गाय पालन को अधिक लाभकारी और व्यावहारिक बना रहे हैं।यदि देशी गाय आधारित कृषि और पशुपालन प्रणाली को व्यापक स्तर पर अपनाया जाए, तो भारत न केवल कृषि उत्पादन में टिकाऊ विकास प्राप्त कर सकेगा, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाकर किसानों की आय में वृद्धि कर पाएगा। इससे पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य सुरक्षा, जैविक कृषि विस्तार और ग्रामीण रोजगार सृजन के नए अवसर उत्पन्न होंगे।अतः यह कहा जा सकता है कि देशी गायों का संरक्षण और संवर्धन केवल एक परंपरा निभाने का कार्य नहीं, बल्कि यह भारत के भविष्य की कृषि व्यवस्था, ग्रामीण समृद्धि और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। देशी गाय आधारित प्राकृतिक खेती और पशुपालन मॉडल अपनाकर भारत एक स्वस्थ, समृद्ध और टिकाऊ राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर हो सकता है।